व्यक्त करती है जहाँ परस्पर विरोधी वर्गों में समझौता हो जाता है। दूसरे शब्दो मे उदार समाज के अन्तर्गत परस्पर विरोधी वर्ग अपने अपने हितो की पूर्ति के लिए एक दूसरे के विरुद्ध कार्य नही करते बल्कि सुलह- समझौते के आधार पर कोई एक ऐसा समाधान निकाल लेते हैं, जिसमे सबके हितो का ध्यान रखा गया हो। राजनीति का प्रयोग ऐसा समाधान ढूँढने के लिए ही किया जाता है। अत: राजनीति मूलत: 'संघर्ष के समाधान का साधन' है। राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण यह स्वीकार करके चलता है कि समाज में सुलह- समझौते तथा वैध बल-प्रयोग के द्वारा किसी भी तरह के मतभेद, संघर्ष या विवाद को सुलझाया जा सकता है। राजनीति समाज मे शांति, व्यवस्था और न्याय की स्थापना का साधन है।

राजनीति सामान्य हित को बढ़ावा देने का साधन है (Politics is an intrument of promoting common good) — राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण यह स्वीकार करता है कि समाज मे विभिन्न वर्गों के हितो में जो विरोध, मतभेद या विवाद पाया जाता है वह, बहुत गहरा नही होता है। जब विभिन्न वर्ग अपने अपने संकीर्ण हितो से थोड़ा हटकर सोचते हैं, तो उन्हे 'सामान्य हित' दिखाई दे जाता है। उदारवाद की दृष्टि में सामान्य हित कोई एकसार वस्तु नही है, बल्कि वह परस्पर विरोधी हितो मे संतुलन की अवस्था है। राजनीति का ध्येय लोगो को उसी 'सामान्य हित' तक पहुँचने में सहायता करना और उसकी सिद्धि के साधन जुटाना है। सामान्य हित मे सभी समूह के हितो को आपस मे जोड़ने और इनमे समायोजन स्थापित करने की गुंजाइश रहती है। परस्पर विरोधी वर्ग एक दूसरे को समझा- बुझाकर, विश्वास दिलाकर, ऐसे नियम और तरीके ढूँढ लेते हैं जो 'सामान्य हित' के प्रतीक हो।

उदारवाद के अन्तर्गत यह आशा की जाती है कि अधिकारिक पदो के लिए होनेवाले चुनाव, चुनाव मे खुला प्रचार, वोटो की गिनती, विपक्ष के साथ बहस ये सब चीजें विभिन्न समूहों को सामान्य हित तक पहुँचने में मदद करती है।

उदार समाज मे व्यक्तियो के विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा संघ बनाने और सभा करने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। इससे लोग न केवल अपने सामान्य हित वाले लोगो के सम्पर्क मे आते है, बल्कि उनके विचार और अनुभव की जानकारी भी प्राप्त कर लेते है। इस तरह विभिन्न समूहो की परस्पर क्रिया के फलस्वरूप लोग 'सामान्य हित' के प्रति सजग हो जाते हैं, और उसका समर्थन करने लगते है। इस सामान्य हित की चेतना पैदा होने पर लोग न केवल अपने समाज के अन्य सदस्यो के साथ एकता का अनुभव करते है, बल्कि परस्पर विरोधी हितो के मेल जोल से समाज प्रगति की दिशा में आगे बढ़ता है।

समस्या - उदारवादी दृष्टिकोण की मान्यताओं का दावा

1. राजनीति का स्वरूप — परस्पर विरोधी हितो मे सामंजस्य
2. व्यक्ति कि स्थिति — एक दूसरे से कटी हुई स्वाधीन ईकाइयाँ
3. समाज की संरचना — स्वाधीन व्यक्तियो का समुच्चय
4. सामान्य हित — परस्पर विरोधी हितो मे संतुलन की अवस्था
5. संघर्ष की प्रकृति — यह बहुत गहरा नही होता है।
6. प्रगति का साधन — संघर्ष का समाधान
7. बुनियादी सिद्धान्त — स्वतंत्रता
8. मुख्य प्रवर्तक — लॉक, बेंथम, मिल, लास्की

अतः संक्षेप मे हम कह सकते है कि उदारवादी दृष्टिकोण ऐसे समाज के लिए उपयुक्त है जिसमे धन-सम्पदा, पद-प्रतिष्ठा और शक्ति की भारी विषमताएँ न हो और समाज के सब सदस्य करीब करीब बराबरी के स्तर पर लेन देन मे समर्थ हो।

—— o ——

Scanned with CamScanner